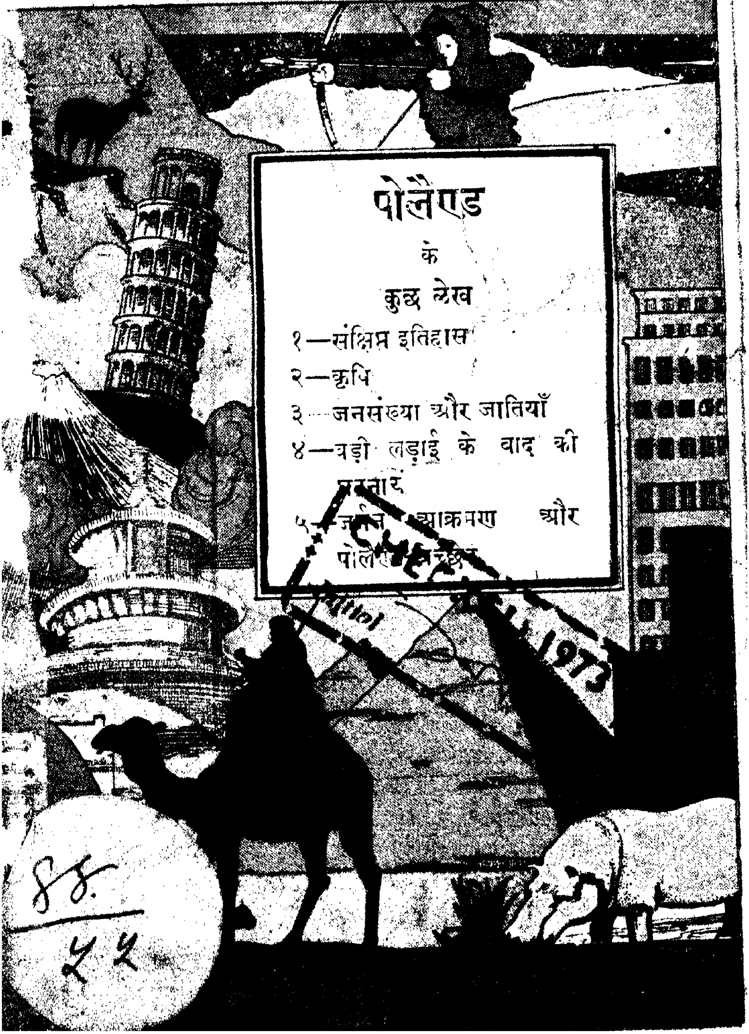
श्व दर्शन

पोलैंड



पोलैण्ड

के

कुछ लेख

अक्तूबर १९३९] **देश-दर्शन** [आश्विन १९९६

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

संख्या ५] **पोलैंगड** [वर्ष १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
Single copy As. -/6-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
एक प्रति ।=)

विषय-सूची

सूचना

पोलैण्ड एक प्रजातन्त्र राज्य था। २१ मार्च सन् १६२१ ई० में यह राज्य स्थापित हुआ। १६१४ के महा-युद्ध के बाद रूस, आस्ट्रिया और प्रूशा (जर्मनी) के भागों (जो उनके अधिकार में १८१५ से थे) को अलग करके यह राज्य बनाया गया। इसके उत्तर में लिथु-येनिया, लैटविया, पूर्व में यूक्रेन और रूस और दक्षिण में चेकोस्लोवेकिया और रूमानिया देश थे। पोलैण्ड का स्वतंत्र राज्य अभी अगस्त सन् १६३६ तक कायम रहा किन्तु हिटलर (जर्मनी) सितम्बर के पहिले सप्ताह में इसके ऊपर आक्रमण कर बैठा और सारा पोलैण्ड जर्मनी और रूस के अधिकार में हो गया। इस समय पोलैण्ड का आधा पूर्वी भाग रूस के अधिकार में, और आधा पश्चिमी भाग जर्मनी के अधिकार में है।

पोलैण्ड का बड़ा लहरदार (कुछ ऊँचा नीचा) मैदान जर्मनी के निचले प्रदेश और रूस के बड़े मैदान को मिलाता है। यह मैदान दक्षिण में कार्पेथियन पर्वत से लेकर उत्तर में बाल्टिक सागर तक फैला हुआ है। उत्तर-पूर्व में यह मैदान ड्राइना नदी को और दक्षिण-पश्चिम में ओडर नदी को छूता है। इस मैदान के दक्षिण में

कार्पेथियन पर्वत है, और अधिक आगे कार्पेथियन का पर्वतीय मैदान है जो विस्चुला, सान नीस्टर नदियों के किनारे किनारे पश्चिम से पूर्व तक फैला हुआ है। इस मैदान के उत्तर में साइलोशिया की पहाड़ियाँ, क्रेकाओजरा (पर्वत)गेलोशिया पठार, लिसा गोरा-पठार, लुबलिन की पहाड़ियाँ और पोडोलियन पठार हैं। इन पहाड़ी प्रदेशों की ऊँचाई समुद्र-तल से २००० फुट है। पोज़नान, मज़ो-विया, पोडलासिया, और पोलेज़ी के प्रान्त पोलैण्ड के मैदान के मध्यवर्ती भाग में स्थित हैं। इन प्रान्तों में होकर बड़ी बड़ी नदियाँ बहती हैं, उत्तर की ओर ६ या ७ सो फुट ऊँचा पठार है। इस भाग में बड़ी बड़ी झीलें, निचले मैदान और दलदल हैं। यह पामरेनिया से मज़ोवियन झीलों द्वारा व्हाइट (श्वेत) रूस तक फैले हुये हैं। यहाँ नदियों और झीलों का जाल सा बिछा है। विश्चुला नदी के बाईं ओर ज़मीन अधिक उपजाऊ है। दाहिनी ओर की ज़मीन कम उपजाऊ है। फिर भी पोलैण्ड का मैदानी भाग बड़ा उपजाऊ है। दक्षिण के पहाड़ी प्रदेश में कई प्रकार के खनिज पदार्थ पाए जाते हैं।

पोलैण्ड की नदियां, झीलें और नहरें।

पोलैण्ड का मध्यवर्ती भाग विश्चुला नदी का बेसिन है। यह नदी बेसकिड के पश्चिमी भाग से निकलती है और पोलैण्ड के मैदान में होकर बहती है। अपनी सहायक नदियों का पानी लेती हुई डैंज़िग, के समीप बाल्टिक सागर में जाकर गिरती है। सान, वीप्रज़, पिलीका और बग विश्चुला की सहायक नदियाँ हैं। नारेव नदी, बग की सहायक नदी है। नारेव की सहायक नदियाँ आगस्टाव नहर द्वारा नीमेन नदी से मिली हैं। बग नदी रोवायल नहर द्वारा प्रीपेट और नीपर नदियों से मिली है। बिडगोस्ज़क नहर विश्चुला नदी को ओडर नदी से मिलाती है। विश्चुला नदी की बाढ़ बड़ी भयानक होती है। जब कार्पेथियन के मैदान में वर्षा होती है। तो मैदान में (विश्चुला के मैदान) बाढ़ आजाती है इससे अधिक हानि हो जाती है। जब कभी भी विश्चुला के निचले भाग में बरफ जम जाती है और नदी नदी का पानी स्वतंत्रता पूर्वक नहीं बह सकता तो बाढ़ आ जाती है।

पोलैण्ड के पश्चिमी प्रदेश का कुछ भाग ओडर नदी के बेसिन में है। वार्टा नदी दक्षिणी पर्वतीय-श्रेणियों से

निकलती है। यह नदी ४५० मील लम्बी है। प्रोज़ना और नोटेक नदियां, बार्टा नदी की सहायक हैं। बार्टा और उसकी साहक मिलकर पोलैण्ड का उपजाऊ मैदान बनाती हैं। इसी भाग में पोलैण्ड की पुरानी राजधानियाँ जिनोज़नों, पोज़नान कालीस्ज स्थित हैं। गोपलो नदी की लम्बाई ८० मील और चौड़ाई १०० फुट है। यह नदी पोलैण्ड की प्राचीन कहानियों में प्रसिद्ध है। उत्तर-पूर्व की ओर ड्राइना नदी का बेसिन है। विलना प्रान्त का कुछ पानी डिसना नदी में बह जाता है। इस भाग में बहुत सी झीलें और दलदल हैं। नारोच की झील ३१ वर्गमील है। यह पोलैण्ड की सब से बड़ी झील है। नीमेन, नारेव, और जासिओल्दा नदियों के प्रदेश पोलैंड के सब से बड़े और घने बन हैं। लकड़ी के लट्ठों के बड़े बड़े बेड़े इन नदियों में सदैव बहते दिखाई पड़ते हैं। नीपर की सहायक प्रीपेट नदी के बेसिन में बड़ा घना बन है। यह नदी ओजिन्स की नहर द्वारा नीमेन से और रायल नहर द्वारा बग नदी से मिली हुई है।

नीस्टर और उसकी सहायक नदियां पोलैंड के

दक्षिणी-पश्चिमी भाग का पानी ले जाती हैं। रूमानिया और रूस की सीमाओं का पानी भी इन्हीं नदियों में आता है।

★ ★ ★ ★
★ ★ ★
★ ★
★

जलवायु

पोलैंड न पश्चिमी योरूप की तरह समशीतोष्ण है न रूस की तरह विषम। फिर भी पोलैण्ड की जलवायु एक प्रकार से महाद्वीपीय है। यहां जाड़े में बरफ़ जम जाती है और गरमी में सख्त गरमी होती है। यहाँ सब से ऊंची ताप ६५.५ और सब से नीचा ताप—३७.६ है। यहां पछुआ हवायें साल भर चलती रहती हैं। उन्हीं से वर्षा होती है। औसत से मैदान में २२ इञ्च वर्षा होती है। पठार और पहाड़ी भाग में अधिक वर्षा होती है। यहाँ बरफ अधिक नहीं पड़ती यहां की नदियां ढाई-तीन महीने तक बरफ़ से ढकी रहती हैं। वारसा (राजधानी) में १८ अक्तूबर को साल में पहले पहल बरफ पड़ती है और १५ मार्च को अन्तिम बरफ गिरती है। गेलीशिया में सब से अधिक विकराल जलवायु रहती है। यहां उत्तर की ओर से आने वाली ठंडी हवायें ऊंचाई के कारण और भी अधिक विकराल हो जाती हैं। दक्षिण की ओर से आने वाली गरम हवाओं को कार्पेथियन पर्वत रोकते हैं। सरदी के बाद गरमी की ऋतु एकदम आती है। इसी से बरफ अचानक पिघलती है। सड़क कीचड़ से भर जाती है और नदियों में बाढ़ आती है।

—

वनस्पति

पोलैंड में देवदार, चीर, सनोवर, बलूत आदि पेड़ों के बन पाए जाते हैं। शफ्ताल्, आलूबुखारा, सेब नाशपाती, नीबू, मकोय आदि फल के पेड़ सब कहीं उगते हैं। इश्कपेचा की बेल भी पोलैण्ड में हर एक स्थान पर लगाई जाती है। नींबू का पेड़ पोल लोगों को बहुत पसन्द है। प्राचीन समय में इसी के पेड़ के नीचे न्याय होता था। पोल लोगों के गानों में इस का नाम अक्सर आता है।

जङ्गली जानवर

रेनडिअर, बारहसिंहा हिरण, जंगली घोड़े इत्यादि अब भी पोलैण्ड में पाए जाते हैं। वियालोवीज् के जंगल में विसन (सांड) पाया जाता है। वारहसिंघा पोलैसी के दलदलों में पाया जाता है। तातरा पहाड़ियों में साँभर, हिरन, नील गाय आदि जानवर पाये जाते हैं। चीता, रीछ, तेंदुआ, उदबिलाव बनबिलाव, बिज्जू, जंलली सुअर आदि जानवर कार्पेथियन पर्वतों के जंगल में पाए जाते हैं। जंगलों में तरह तरह के पक्षी भी पाये जाते हैं।

उपज

खेती

पोलैंड का मुख्य पेशा खेती है। यहां की जनता का ६५ फी सदी भाग खेती पर निर्भर करता है। १६१४ की लड़ाई से यहां खेती को बड़ा भारी धक्का पहुंचा था। पोलैण्ड में १६,४४५ जागीरें बड़ी हैं। उन जागीरों में ५० फी सदी से अधिक भूमि में खेती होती है। कुल छोटी जागीरें ३२,६८,५०० हैं। बड़ी जागीरों का क्षेत्रफल १४,१८६, ६०० हेक्टर है और छोटी जागीरों का क्षेत्रफल २४,६४६,२०० हेक्टर है। इस प्रकार पोलैण्ड की भूमि का अधिकांश भाग किसानों के अधिकार में है। निम्न-लिखित तालिका से पता चलता है कि पोलैण्ड में खेती करने योग्य भूमि अधिक है।

	हेक्टर	कुल क्षेत्रफल का प्रति सैकड़ा
१—खेती करने योग्य भूमि	१८,३०७,८००	४८·६
२—दलदली ज़मीन	३,८३८,०००	१०·२
३—चराई के मैदान	२,५२८,६००	६·७
४—जंगल	८,९४३,७६२	२१·१
५—बेकार ज़मीन	३,९२४,८००	१०·४

पोलैण्ड दर्शन

पोलैण्ड की मुख्य उपज राई, जई गेहूँ, जौ और आलू है।

गेहूँ	१,४७६	(मेट्रिक)	टन
राई	५,६८८	(मेट्रिक)	टन
जौ	१,६३४	"	"
जई	३,३६०	"	"
आलू	३१,७५८	"	"

पोलैण्ड में खासी उपज होती है और उसका मुख्य कारण यह है, कि पोलैंड सरकार की ओर से किसानों को बहुत थोड़े सूद पर रुपया खेती के सामान (कल, पुर्ज़े आदि) खरीदने के लिये दिया जाता है।

पोलैण्ड के २४ फ़ी सदी भाग में जंगल है। जंगल का क्षेत्रफल ८,९३४,७६२ एकड़ है। इसमें से २,८३४००० एकड़ सरकारी जंगल हैं। अधिकांश बन देवदार के हैं। वियालोवीज़ा के बनों में २०० साल के प्राचीन देवदार वृक्ष मौजूद हैं। अगस्टोव, ग्रोडरो, कुर्पी टचोले, पोलेसी और पूर्वी कार्पेथियन नाम के दूसरे प्रसिद्ध बन यहां हैं।

निवासी

जनसंख्या

पोलैण्ड का क्षेत्रफल १ लाख वर्गमील हैं और जनसंख्या ३ करोड़ है। पोलैंड राज्य में १६ प्रान्त हैं। बियालीस्टाक, क्रैकाओ, कीलसे, लेमबर्ग, लोडज़ लुबलिन, नोओगरोडेक, पोलेसी, पोमोरज़े, पोज़नान, साइलेशिया स्टेनिशलवाओ, टारनोपोल, विलना, वोलहीनिया, वारसा आदि प्रान्तों में भिन्न भिन्न जाति के लोग रहते हैं।

जनसंख्या के विचार से पोलैंड का योरुप में छठां नम्बर है। रूस, जर्मनी, फ्रांस, ग्रेटब्रिटेन इटैली की जनसंख्या यहां से अधिक है। यहां ४० नगरों की जनसंख्यां २५,००० से अधिक है। वारसा (पोलैण्ड की राजधानी) जनसंख्या ११ लाख है। लोड्ज नगर की जनसंख्या लगभग ५ लाख है। लेम्बर्ग की २ लाख, क्रेकाओ की २ लाख, पोज़नान की लगभग २ लाख और विलना की लगभग १ लाख है।

साइलेशिया, लोड्ज़, वारसा के कारबारी प्रदेश और क्रेकाओ, लेम्बर्ग, टारनोपोल और कील के उपजाऊ प्रदेशों की जनसंख्या बहुत घनी है।

पोलैण्ड दर्शन

निम्नलिखित तालिका में उन जातियों की संख्या दी जाती है जो पोलैण्ड में (१६२१ में) पाई जाती थीं।

राष्ट्र	कुल जोड़	प्रति सैकड़ा
१—पोल जाति	१,८८,१२,०००	६९·२
२—रूथेनियन और यूक्रेनियन	३८,८३,०००	१४
३—यहूदी	२१,२३,०००	७·८
४—व्हाइट रूस जाति	१०,५७,०००	३·९
५—जर्मन	१०,३६,०००	३·८
६—लिथुवेनियन जाति	७२,०००	०·३
और दूसरी जातियां	२,१०,०००	१·०
कुल जोड़	२,७१,९३,०००	१००

१६३६ में पोलैंड की जन-संख्या लगभग ३ करोड़ ५० लाख थी।

जब पोलैण्ड का राज्य बना तो रूस, जर्मनी और चेकोस्लोवेकिया आदि देशों में पोल जाति के २० लाख लोग रह गये और लगभग ३० लाख पाल लोग अमरीका, ब्राज़ील और फ्रांस को चले गये।

पोलैण्ड की कुल जन-संख्या में दो-तिहाई पोल जाति के लोग हैं। सभी पश्चिमी तथा मध्यवर्ती प्रान्तों में पोल लोगों की अधिकता है। साइलीशिया प्रान्त में जर्मन जाति की अधिकता है। तो भी वे पोल लोगों से

संख्या में कम ही हैं। पोज़नान, पोमेरज़े प्रान्त में भी जर्मन बसे हैं। किन्तु इनकी संख्या बहुत कम है। स्टेनिसलावाओ, टारनो पोल, वोलहीनिया, पोलीसिया के रूथेनियन प्रान्तों में पोल जाति के लोग कम हैं। यहूदी लोग तमाम देश में फैले हुए हैं। और वारसा, लोड्ज़ और पूर्वी प्रान्तों में यहूदी लोग काफी संख्या में पाए जाते हैं। माज़ोवियन जाति के लोगों का शरीर, सुन्दर गठीला होता है। यह लोग अपनी पुरानी प्रथा के बड़े हठी हैं और मोटा ऊनी कपड़ा पहनते हैं। यह लोग बड़े प्रजा-तंत्रवादी और उपनिवेश बसाने वाले होते हैं। पोशाक और भाषा सभी पोल लोगों की एक सी है।

पोलैण्ड की खानें और कारखाने

पोलैण्ड में कोयला बहुत पाया जाता है। योरुप में इसका तीसरा नम्बर है। ऊपरी साइलेशियन बेसिन, क्रेकाओ के बेसिन और डोम्ब्रोवा के बेसिन में कोयले की बड़ी बड़ी खानें हैं। यहाँ पर बहुत बड़ी मात्रा में कोयला निकाला जाता है। १९२७ ई० में ३८,०७२,००० टन कोयला उतना ही जगह से निकाला गया जितनी जगह में १९२३ में ३६,०९७००० मेट्रिक टन कोयला निकाला गया था। नई कलें खानों में लगाई गई हैं। बड़े बड़े योग्य व्यक्ति काम पर लगाए गये हैं। नई नई खानें भी मिली हैं। लगभग एक लाख व्यक्ति इन खानों में काम कर रहे हैं। यहाँ से जितना कोयला निकलता है वह सबका सब यहाँ के कारखानों में नहीं खर्च हो सकता। इसलिये ११,०९,५०,००० टन कोयला बाहर भेजा जाता है।

पोलैण्ड में कोयले की खानें दक्षिणी-पश्चिमी भाग में पाई जाती हैं। इसके विपरीत मिट्टी के तेल की खानें दक्षिण-पूर्व में मिलती हैं। बरीस्ला, ड्रोहोवेक्च, लेम्बर्ग और स्टैनिश ल्वावो के प्रान्तों से १९२७ ई० में ७९८,०८२

टन तेल निकाला गया। जस्ता भी पोलैण्ड की खानों में बहुत निकलता है। १९२७ ई० में १२५,३७२ टन जस्ता पोलैण्ड की खानों से निकलता। लोहा भी पोलैण्ड में काफी मात्रा में पाया जाता है। सन् १९२६ ई० में ३,१५,३४० टन और १९२९ ई० में ४३०,४२७टन कच्चा लोहा पोलैण्ड की खानों से निकाला गया।

सन् १९१४ की बड़ी लड़ाई का पोलैण्ड के कारखानों पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। बहुत से कारखाने तो बिलकुल बर्बाद कर डाले गए। कितने ही कारखाने जब्त होगये और लड़ाई का सामान बनाने से उनको मना कर दिया गया। ऐसे कारखानों के रहने से भय मालूम हुआ कि कहीं वे बैरियों के हाथों में न आजाँय। १९२४ ई० में फिर से नए कारखानों के खोलने की योजना की गई और बहुत से स्थानों पर नए नए कारखाने खोले गए। १९२७ ई० में सारे पोलैण्ड में ५२,२८१ आपरेटिव काराखानों में लगाए गए।

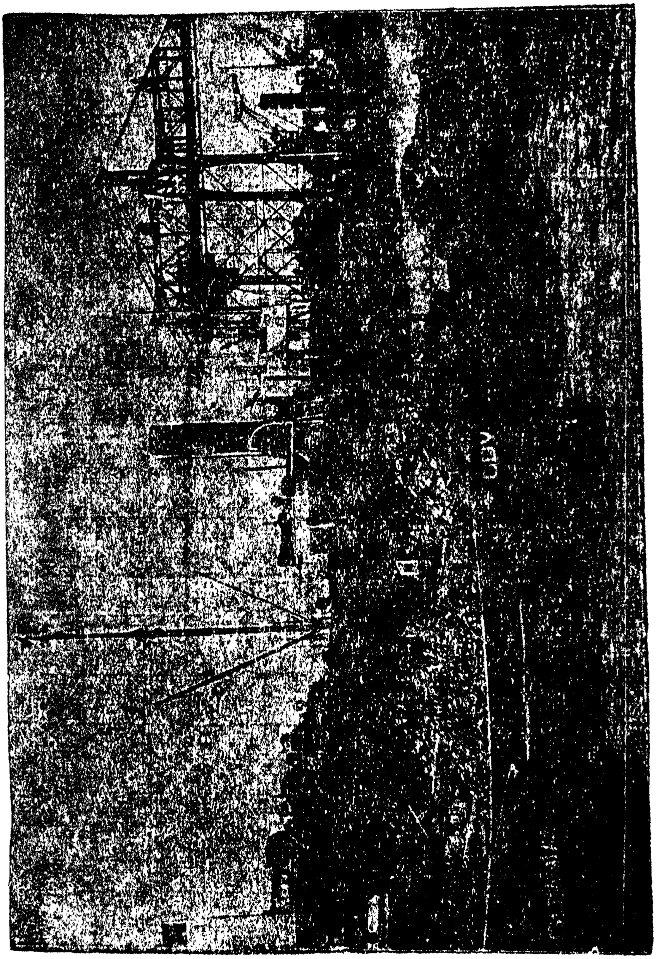
वारसा इन कारखानों का केन्द्र है। यहाँ कलें, खेती की कलें, लोहे, पीतल, ताँबे आदि के सामान, लोकोमोटिव, मोटरकार ब्वायल वर्क, फाउन्डरी इत्यादि सामान

बनाए जाते हैं। पोलैण्ड के कारखानों में कपड़ा बुनने के कारखाने सबसे अधिक हैं। इन कारखानों में १,८८,००० व्यक्ति काम कर रहे हैं। इन कारखानों के लिये कच्चा सामान बाहर से आता है। सूती, ऊनी कपड़ा, सूत, रेशमी कपड़ा, बेल बूटे और दूसरे सामान इन कारखानों में तयार किये जाते हैं। लोड्ज़, पाबिआनिस के समीपवर्ती नगर, ज़डुन्सका, ओल्वा, टोनास्चाओ, चर्गीर्चे ज़ीरार डाओ आदि ऊनी-सूती कपड़ा बुनने के बड़े कारखाने हैं और यहाँ पर लगभग सभी प्रकार के सूती कपड़े बनाए जाते हैं। ब्रेस्ट लिटोव्स्क और बील्स्क के प्रान्तों में ऊन की बड़ी उपज है। लोड्ज़, ब्रेस्टलिटोक, और कालीज़ आदि स्थानों पर रेशम तैयार होता है। इन स्थानों पर बेल-बूटे भी अच्छे बनाये जाते हैं। चेन्सटाचोवा नगर में फ्लेक्स (सन) का बड़ा रोज़गार होता है।

पोलैण्ड में गुड़, चीनी और शक्कर बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं।

कारबार

आने जाने के साधन अच्छे न होने कारण पोलैण्ड का व्यापार उतना उन्नत्तिशील नहीं है जितना कि वह बनाया जा सकता है। इसके दो मुख्य कारण हैं। एक तो यह कि सन् १९१४ की बड़ी लड़ाई के पहले पूर्वी भाग में रूस का आधिपत्य होने के कारण रेल की सड़कें नहीं बन सकीं और दूसरे यह कि बड़ी लड़ाई के समय में जर्मनी ने पोलैण्ड की सड़कों और रेलों को नष्ट कर डाला। फिर भी पोलैण्ड में १३,००० मील रेलवे लाइन है। १००० मील प्राइवेट छोटी लाइन है। सामान के आने जाने और और देश के दूसरे भीतरी कार्यों में काफी वृद्धि हुई। १९२७ ई० में ४५,००,००० पौंड की आमदनी रेलों से हुई और ८० मील नई रेलवे लाइन बनाई गई। पोलैण्ड में २५,००० मील लम्बी सड़क बनाने, रेलवे लाइन की वृद्धि करने और नहरों के बनाने की योजना पोलैंड सरकार ने तैयार की है। इस योजना के अनुसार कुछ काम हो चुका है किन्तु पूर्ति अभी नहीं हो पाई। यह योजना रूस के साथ व्यापार करने और कोयला, लकड़ी तथा तेल आदि को सभी भीतरी भागों में भली भांति पहुँचाने के लिये बनाई गई है। रूस की राजनैतिक अवस्था विपरीत होने के कारण वारसा नगर



गिडीनिया बन्दरगाह का एक दृश्य

योरुप के आने जाने वाले मार्गों का केन्द्र तेज़ी से नहीं बन सका।

पोलैण्ड में बन्दरगाहों की बड़ी कमी है। डेन्ज़िग बन्दरगाह यहां की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सका। पोलैंड सरकार ने इस कमी की पूर्ति के लिये पहले टज़्यू नगर को एक अच्छा बन्दरगाह बनाने का प्रयत्न किया। किन्तु जब उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई तो गिडीनिया स्थान पर एक बड़ा बन्दरगाह बनाया। इसके बनने से पोलैंड के व्यापार में वृद्धि हुई है। १९२६ ई० में ४,१४,००० टन सामान इन बन्दरगाहों से भेजा गया था किन्तु १९२७ में ८,९६,००० टन सामान भेजा गया।

पोलैण्ड में नदियां बहुत हैं, जिनके द्वारा यहां का बहुत सा व्यापार इन्हीं नदियों द्वारा होता है। किन्तु इन नदियों के घाट और तटों को ठीक कराना बहुत ही आवश्यक है। इस कार्य्य के लिये रुपये की बड़ी ज़रूरत है। इस कार्य्य की पूर्ति में बहुत कमी है।

पोलैण्ड का व्यापार

बड़ी लड़ाई के कारण १६२१ ई० तक पोलैंड के व्यापार की दशा बड़ी डांवाडोल रही। रूस, आस्ट्रिया आदि देशों में जो सामान जाता था उसका जाना बन्द हो गया। किन्तु १६२४ ई० में पोलैंड के निवासियों की आर्थिक दशा कुछ सुधर गई। और सभी प्रकार की वस्तुओं की मांग बढ़ गई। पोलैंड की उपज भी बढ़ गई। देश की आवश्यकता पूरी करने के बाद २० लाख टन आलू, ५ लाख टन अनाज और १,५०,०० टन चीनी बाहर भेजी गई। तब से बराबर खेती की उपज बढ़ती जा रही है। खाने पीने का सामान गोश्त, आदि यहां से बाहर भेजा जाता है। कोयला और लकड़ी पोलैंड से अधिक मात्रा में बाहर भेजी जाती है। सूती कपड़ा यहां से रूमानिया को जाता है।

सन् १६२१ ई० में पोलैंड ने चेकोस्लोवेकिया और रूमानिया से और १६२२ ई० में आस्ट्रिया, यूगोस्लैविया, स्विटज़रलैंड, फ्रांस, इटली, जापान से व्यापार सम्बन्धी संधियाँ की। उसके बाद फिनलैन्ड, टर्की, इङ्गलैंड, डेन्मार्क, स्वेडन, अमरीकन, एस्थोनिया, लैटविया, फारस,

जर्मनी और रूस आदि देशों से भी व्यापारिक संधियाँ हुईं।

पोलैंड का आधा बाहरी व्यापार जर्मनी के साथ होता है। ७ फी सदी व्यापार इङ्गलैण्ड के साथ होता है। शेष व्यापार का अधिकांश भाग आस्ट्रिया और रूमानिया के साथ होता है।

पोलैंड में रुई अमेरिका से जरमनी द्वारा आती है। रूस के साथ बहुत कम व्यापार होता है।

पोलैंड से अनाज, दूध, मक्खन, लकड़ी, चीनी, सन, पटसन का सामान, कोयला, लोहा, फौलाद, पेट्रोल, रसायन पदार्थ और सूती कपड़े इत्यादि बाहर को भेजे जाते हैं।

खेती की कलें तथा सामान, मशीनें, कलों के पुर्ज़े, कच्चा माल, मछली, नारियल, चरबी और दूसरा खाने का सामान (जो पोलैंड में नहीं होता है) बाहर से आता है।

शिक्षा और धर्म

पोलैण्ड में स्कूलों का जाल सा बिछा है। सात साल से १४ साल तक के बालक तथा बालिकाओं को अनिवार्य-शिक्षा दी जाती है। सन् १६२५ ई० में २७,४१४ प्राइमरी (प्रारम्भिक) स्कूल पोलैण्ड में थे। इन स्कूलों में ६६,१७६ अध्यापक शिक्षा प्रदान करते थे। और ३२,३७,३४० विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। इन स्कूलों के अधिकांश भाग में पोलिश भाषा में शिक्षा दी जाती है, शेष भाग में जिस भाषा की जितने स्कूलों में शिक्षा दी जाती है उसकी सूची नीचे दी गई है :—

भाषा	स्कूल
१—रूथेनियन	३,०२५
२—जर्मन	१,२१७
३—इद्दीस	११३
४—लिथुवेनियन	६२
५—हिब्रू	७१
६—चेक	३६
७—व्हाइट रूसी भाषा	३२
८—रूसी भाषा	११

यहाँ पर ७७८ सेकेन्ड्री स्कूल हैं। जहाँ २,१६,६७८ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इनमें १८ प्रतिशत लड़के किसानों के हैं। इसके सिवा पोलैण्ड में कुल १३ यूनिवर्सिटी और कालेज हैं। क्रेकाओ की यूनिवर्सिटी बहुत प्राचीन है। और सन् १३६३ ई० में यह स्थापित की गई थी। वारसा लेम्बर्ग, विलना और पोज़न में भी विश्वविद्यालय हैं। वारसा में एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय खोला गया है। लुबलिन में कैथलिक विश्वविद्यालय है। पोलैण्ड में ८३६ टेकनिकल स्कूल हैं, जहाँ पर ६४,६६५ विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं।

धर्म :—१६२१ के विधान के अनुसार सभी चर्चों (गिरजाघरों) को स्वतंत्रता प्राप्त है। पोलैण्ड के ७५ फीसदी निवासी रोमन कैथलिक धर्म के मानने वाले हैं। ३१,००,००० व्यक्ति ग्रीक-आर्थोडाक्स चर्च के मानने वाले हैं। १०,१०,००० व्यक्ति लूथर और कालविन के मतों के अनुयायी हैं। २८,००,००० यहूदी हैं। यहाँ पर कुछ थोड़े से मुसलमान भी हैं।

फौजी शिक्षा

पोलैण्ड में फ़ौजो शिक्षा देने के लिये स्कूल और कालेज हैं। इन संस्थाओं में हर एक प्रकार की फ़ौजी शिक्षा मिलती है। बड़े बड़े अफ़सरों की शिक्षा के लिये अलग एक कालेज है। टैंक, मशीन गन, एन्टी-एअर-क्राफ़्ट आदि सभी वस्तुओं का प्रयोग बताया जाता है।

सभी लोगों को २१ साल के बाद २४ या २५ महीने तक फ़ौज की शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। इसके बाद ४० साल तक रिज़र्व सर्विस में रहना पड़ता है। इस बीच में १४ हफ़्ते ट्रेनिङ्ग, पाना आवश्यक है। उसके बाद ४० साल से ५० साल तक टेरीटोरियल सेना में रहना पड़ता है। जो लोग १७ से २८ वर्ष के बीच में सरकार द्वारा फ़ौजी शिक्षा के लिये नहीं बुलाए जाते उनको स्वयंसेवक बनकर शिक्षा ग्रहण करने की आज्ञा है। यहाँ पर हवाई जहाज़ की शिक्षा भी दी जाती है।

देश दर्शन

उच्च पदाधिकारी गण

पोलैण्ड का प्रेसीडेण्ट सारी सेना का सेनाध्यक्ष है। प्रेसीडेण्ट राष्ट्र-रक्षक-कमेटी का संरक्षक है। इस कमेटी में युद्ध-मंत्री, विदेश-मंत्री अर्थ-मंत्री, फ़ौज का इन्स्पेक्टर जनरल और दूसरे सदस्य (जो प्रेसीडेन्ट और मंत्रियों की राय से होते हैं) होते हैं। फ़ौज के इन्स्पेक्टर जनरल की राय लिये विना कमेटी कोई निर्णय नहीं कर सकती। इसकी संरक्षता में एक "वार कैबिनेट" होती है। फ़ौज का इन्स्पेक्टर जनरल ही फ़ौज को आज्ञा दे सकता है। युद्ध के समय इन्स्पेक्टर जनरल प्रधान सेनापति का काम करता है। इसके सिवा पुलिस हैं जो सारे पोलैण्ड के बड़े बड़े नगरों और गांवों में रक्षक का काम करते हैं।

पोलैण्ड का इतिहास

दसवीं शताब्दी के पहिले के पोलैण्ड के इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता। ज़ीमोविट नामक राजकुमार ने क्राबासीजा प्रान्त (कार्पेथियन से बग तक के भाग) पर अधिकार जमाया। इसी समय यहाँ ईसाई धर्म का प्रचार हुआ। ९६२ ई० में मीज़को प्रथम गद्दी पर बैठे और ९९२ तक उन्होंने राज्य किया। मीज़को को जारडन नामक पादरी ने ग्रीक कट्टर पंथी चर्च का मेम्बर बनाया। इसके पश्चात् बोलिसलाउस (प्रथम, द्वितीय और तृतीय) ने ९९२ ई० से ११३९ तक राज्य किया।

बटवारे का युग (११३८-१३५०)। इस युग में पोलैण्ड का राज्य लगभग आठ भाग में बाँटा गया। बोलिस लाउस तृतीय के पुत्रों के बीच में पहिले चार भागों में बँटा फिर इसके आठ भाग हुये। इस बीच में पोलैण्ड की सारी शक्ति जाती रही और पोलैण्ड पर उसके पड़ोसी धावा मारने लगे। छोटे पोलैण्ड के ड्यूक (जो पोलैण्ड के ड्यूक के नाम से प्रसिद्ध हैं) ने दूसरे पोलैण्ड के छोटे राज्यों को अपने अधि-

कार में कर लिया। और क्रेकाओ को अपनी राजधानी बनाया। इसने सीराडिया प्रान्त को अपने राज्य में मिला लिया।

तेरहवीं शताब्दी के मध्य में तातार लोगों ने पोलैण्ड पर प्रथम आक्रमण किया। इन लोगों ने क्रेकाओ और सैन्डोमीर नगरों को जला दिया और सारे देश को तहस-नहस कर डाला। उसके पश्चात हंगरी देश की ओर तातार लोग चले गये। इस आक्रमण का यह परिणाम हुआ कि पोलैण्ड में जर्मन कारीगर आकर बसे और उन्होंने दृढ़ किले तथा नगर बनाये। उनकी एक जाति बन गई और वे पोलैण्ड के निवासी हो गये।

१२५६ ई० में तातारियों का दूसरा आक्रमण पोलैण्ड पर हुआ। दूसरा आक्रमण पहिले आक्रमण से कम भयानक था। इस बार तातारियों ने सैन्डीमोर और छोटे पोलैण्ड के सारे नगरों को बिल्कुल बरबाद कर डाला। इसी समय पूर्व की ओर से लिथुयेनिया के लोगों ने भी पोलैण्ड पर आक्रमण किया।

लगभग १३०० ई० से ऐसा मालूम होने लगा कि

पोलैण्ड राज्य का नाश हो जावेगा और यह साइलीशिया की भाँति बोहीमियन साम्राज्य का एक भाग बन जायगा। किन्तु ठीक उसी समय बड़े पोलैण्ड के ड्यूक वालाडिस लाउस लोकीटेक ने छोटे और बड़े पोलैण्ड को मिला दिया और १३२० ई० में वह गद्दी पर बैठा। इसने १३३२ ई० में ट्यूटानिक सूरमाओं को प्लासी नामक स्थान पर हराया और इस प्रकार अपने जीवन भर लड़ाइयाँ लड़ लड़कर पौलैण्ड राज्य को छिन्न भिन्न होने से बचाया।

सन् १३३३ ई० में कासीमीर बड़ा गद्दी पर बैठा और १३७० तक उसने राज्य किया। यह बड़ा बहादुर, चतुर, और बुद्धिमान राजा था। इसने राज्य में आर्थिक तथा समाजिक सुधार किए। इसी राजा की बदौलत उत्तरी-पूर्वी व्यापार में पोलैण्ड को भाग मिला। १३७० से १३८२ तक लोई हगारी ने राज्य किया वलाडिस लाउस के समय में पोलैण्ड और लिथुयेनिया राज्य ट्यूटानिक आर्डर के भय से एक हो गये।

जागील्लोनिक काल

जागील्लो लिथुयेनिया प्रान्त का राजा था। वह

वह ईसाई बन गया और कैथलिक मत को मानने लगा। ईसाई मतानुसार उनका नाम व्लाडिसलाउस द्वितीय रक्खा गया। व्लाडिस लाउस और विटोट ने मिलकर पोलैण्ड और लिथुयेनिया का राज्य-प्रबन्ध किया। सन् १४१० ई० में इन दोनों से मिलकर ट्यूटानिक आर्डर (जो बहुत ही कष्ट दे रहे थे) के सूरमाओं के विरुद्ध लड़ाई की तैयारी की। १५ जुलाई सन् १४१० ई० को टैनिन बर्ग या ग्रेनवाल्ल नामक स्थान पर लड़ाई हुई, जिसमें ट्यूटानिक सूरमाओं की हार हुई और वे मैदान छोड़कर भाग गए। इस जीत के कुछ समय बाद थार्न, एलबिन्ग, ब्राउन्स वर्ग और डैन्ज़िग आदि नगरोंने भी आधीनता स्वीकार कर ली। दूसरी अक्टूबर १४१३ ई० का होरोडलो भी मिला लिया गया। इस समय सिगिसमद सम्राट था। व्लाडिसलाउस की मृत्यु लेम्बर्ग नामक स्थान पर १४३४ ई० में ८३ वर्ष की अवस्था में हुई। उसके समय में पोलैण्ड की गणना बड़े राज्यों में होने लगी। व्लाडिसलाउस तृतीय १४४४ ई० में गद्दी पर बैठा। वह लिथुयेनिया का ड्यूक पहले से ही था, अब वह पोलैण्ड और लिथुयेनिया दोनों का राजा होगया।

पोलैण्ड-दर्शन

कासीमीर चतुर्थ (१४४७–६२)

कासीमीर जब गद्दी पर बैठा तो उसे चारों ओर से भय था। लिथुयेनिया में लोग उसके विरुद्ध भड़काए जा रहे थे। ट्यूटानिक आर्डर के लोग उसके विरुद्ध कार्रवाई कर रहे थे। उनको प्रूशा का बादशाह मदद दे रहा था। हंगारी का राजा भी उसके विरुद्ध तुर्कों और रूस आदि देशों को उसके विरुद्ध सहायता करके भड़काता था। कासीमीर ने १७ सितम्बर सन् १६६२ ई० को पक नामक स्थान पर ट्यूटानिक आर्डर को बुरी तरह से हराया। फिर उसने बोहेमिया के राजा पाडीब्राज के जार्ज से संधि कर ली। १४७१ ई० में जार्ज की मृत्यु पर कासीमीर का ज्येष्ठ पुत्र व्लाडिसलाउस बोहेमिया का राजा चुना गया। १४९० ई० में हंगरी का भी राजा चुन लिया गया।

पोलैण्ड साम्राज्य के बढ़ जाने के कारण इसकी सीमा और टर्की राज्य की सीमा एक हो गई। १४८४ ई० में तुर्कों ने कीलिया और एक्करमन के क़िले को ले लिया। इस प्रकार डैन्यूब और नीस्टर नदी के मुहाने उनके अधिकार में हो गए। किन्तु १४८५ ई० में कासीमीर ने

मोलडेविया प्रान्त से तुर्कों को मार भगाया। और २० हज़ार सेना लेकर कालोमिया की ओर चला। बयेज़िद द्वितीय (टर्की का राजा) इस समय मिस्र देश के युद्ध में फँसा था। इसलिये उसने संधि करने के लिये कहा। पोलैण्ड के राजा ने बात मान ली और दोनों के बीच संधि हो गई। उसके बाद फिर उसके समय में कभी तुर्कों ने सिर नहीं उठाया।

सन १५०१ ई० में एलेग्ज़ेन्डर (सिकन्दर) पोलैण्ड का राजा हुआ। इसको टयूटानिक आर्डर और तुर्क दोनों का सामना करना पड़ा। तुर्कों और रूसियों ने इसके समय में लिथुयेनिया को मनमाना बर्बाद किया पोलैण्ड का प्रभुत्व भी वहाँ के उच्च सम्प्रदाय के हाथों में जा चुका था। मोलडेविया और प्रूशा प्रान्त भी पोलैण्ड-साम्राज्य से अलग होने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे।

सौभाग्यवश १५०६ में पोलैण्ड के राजा की मृत्यु हो गई और उसका चतुर भाई सिगिसमद गद्दी पर बैठा। सिगिसमद को प्रूशा प्रान्त को स्वराज्य देना पड़ा। पूर्व की ओर रूस ने भी कई प्रान्तों पर अधिकार जमा

लिया । सिगिसमद अपने भतीजे लोई (जो हंगरी में राज्य करता था) की रक्षा तुर्कों से न कर सका ।

पुनरुत्थान

सिगिसमद प्रथम का ब्याह मिलान के सफ़ोज़ा के साथ हुआ। इससे इटली के कला-कौशल और कारीगरी का प्रचार पोलैण्ड में हुआ । क्रेकाओ (राजधानी पोलैण्ड) में बावेल पहाड़ी का क़िला इटली के प्रसिद्ध कारीगरों का ही बनाया हुआ है। क्रेकाओ के विश्व-विद्यालय में योरुप भर के विद्यार्थी तथा भाषण देने वाले शिक्षक आते थे। नई विद्या-प्राप्ति का प्रभुत्व पोलैण्ड में बढ़ रहा था और पोलिश (गद्य तथा पद्य) भाषा में भी भारी क्रांति मच गई थी।

जिस समय सिगिसमद द्वितीय राज्य कर रहा था, उस समय पोलैंड बड़ी उथल पुथल की दशा में था। पूर्व की ओर रूसी साम्राज्य बढ़ रहा था और बोल्टिक-सागर की ओर स्वेडन राज्य ज़ोर पकड़ रहा था।

सुधार (रिफारमेशन) काल

रिफ़ारमेशन का अर्थ सुधार है। जर्मनी में लूथर

नामक व्यक्ति ने प्राचीन कैथालिक (ईसाई) धर्म के विरुद्ध आवाज़ उठाई और रोम के पोप को कर देने से इन्कार किया। उस समय एक बड़ा गिरजा घर रोम में बन रहा था उसके लिये रुपये की आवश्यकता थी। पोप ने चारों ओर अपने आदमी भेजे यह लोग अपराधों की क्षमा के बदले में रुपया लेते थे। कट्टर पंथी बेचारे इस ध्यान से कि हमारे अपराध क्षमा हो जावेंगे रुपया देते थे ' लूथर ने इसके विरुद्ध प्रचार आरम्भ किया और रुपया न देने की सलाह दी। उसके मानने वाले लोग बाद में प्रोटेस्टेन्ट कहलाए और पोप के मानने वाले कैथालिक कहलाए। जबतक प्रचीन ईसाई धर्म में सुधार होता रहा वह काल सुधार (रिफ़ारमेशन) के नाम से पुकारा जाता है। इसकी लहर सारे योरुप में फैल गई। पोलैंड में भी लोग आये और पोलैंड में बहुत जल्द इसके अनुयायी हो गए। जब प्रोटेस्टेन धर्म का बहुत अधिक प्रचार हो गया तो कैथलिक लोगों ने अपने धर्म की रक्षा के लिये इसके विपरीत काउन्टर रिफारमेशन जारी किया, इसका भी पोलैंड पर भारी असर पड़ा। सारे योरुप में इन दोनों धर्मावलम्बियों के बीच बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ

हुई अन्त में धर्म की स्वतंत्रता सब को प्रदान की गई।

सिगिसमद द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक पोलैंड का कोई राजा न रहा। अंत में वारसा में एक डायट (राजाओं की सभा) बैठी जिसमें वालोइस का हेनरी पोलैंड का राजा चुना गया। किन्तु उसने अपने पोलैंड की गद्दी को मैक्सीमीलियन से बदल लिया। इस पर प्रजा बिगड़ गई। और अपने चतुर नेता जान-ज़मोस्की की सलाह से स्टेफन बाथोरी को गद्दी पर बैठाया। इसने ११ साल तक राज्य किया इसके समय में पोलैंड की अच्छी उन्नति हुई और पोलैंड की धाक दूसरे राजाओं पर जम गई। इसने रूस को मिलाकर हैप्सवर्ग घराने की ताक़त को भी बर्बाद करने का प्रयत्न किया। किन्तु १५८६ में उसकी मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् सिगिसमद तृतीय ने १५८७से १६३२ तक राज्य किया। इसी समय १६१८ ई० में तीस साला युद्ध योरुप में आरम्भ हुआ।

सिगिसमद तृतीय के बाद ब्लाडिसलाउस चतुर्थ सन् १६३२ ई० में गद्दी पर बैठा और १६४८ तक राज्य

करता रहा। इसने पहले ही वर्ष रूस और टर्की को युद्ध में हराया और स्वेडन से संधि की। इसके समय में कज़्ज़ाक (तुर्की लुटेरों) ने बलवा किया, उनको पोलैंड से भी सहायता मिली किन्तु अन्त में वे दबा दिये गए।

व्लाडिस लाउस की मृत्यु के पश्चात् जान कासीमीर फ्रांस से बुलाकर गद्दी पर बैठाया गया। १६४८ से १६६८ तक उसने राज्य किया।

इसी समय स्वेडन के चार्ल्स दसवें ने पोलैण्ड पर आक्रमण किया। कासीमीर डर के मारे तख़्त छोड़कर साइलेशिया भाग गया। इसी बीच रूस के पीटर और चार्ल्स से युद्ध हुआ।

पोलैण्ड की दशा खराब हो रही थी। बाहरी राज्यों का प्रभाव बुरा पड़ रहा था। पोलैण्ड का राज्य-विधान बड़ा ख़राब था। डायट (प्रजा सभा) ही राजा चुनती और दूसरे राज्यप्रबन्ध के क़ानूनों का निर्णय करती थी। किन्तु प्रत्येक सदस्य को यह अधिकार था कि यदि वह चाहे तो सारे डायट के निर्णय को कह कर कि "मैं नहीं मानता" छिन्न भिन्न कर सकता था। डिपुटी

लोग यहाँ तक कर सकते थे कि वे सारे डायट को छिन्न भिन्न कर सकते थे। बाहरी राजा सदैव इन डिपुटी और सदस्यों को मिलाकर अपना काम निकालते थे।

जान तृतीय सोबीसकी ने १६७४-९६ तक राज्य किया। यह एक बहादुर राजा था। उसने तुर्कों का बहादुरी से मुकाबिला किया। सब से बड़ा कार्य्य इसने यह किया कि १३८३ ई० में इसने वियना को तुर्कों से बचाया जिससे योरुप के सभी राजा सोबीसकी का आदर करने लगे।

जान की मृत्यु के पश्चात् १६९७ ई० से १७३३ ई० तक अगस्टस द्वितीय ने राज्य किया। इसका पहले नाम फ्रैड्रिक अगस्तस एलेक्टर आफ् सैक्सनी था। जब राजा का चुनाव हुआ था तो राज्य के १८ उम्मेदवार थे। किन्तु अगस्टस ही चुना गया। इससे और स्वेडन के चार्ल्स बारहवें से लगभग २० साल तक युद्ध हुआ इस बीच पोलैण्ड की शक्ति बहुत क्षीण हो गई और रूस प्रशा और स्वेडन पोलैण्ड को आपस में बाँटने की सोचने लगे।

पोलैण्ड का प्रथम बँटवारा १७७२:—

१७६४ ई० में स्टैनिस लाउस राजा हुआ। सेण्ट

पीटर्सबर्ग की संधि के अनुसार रूस, आस्ट्रिया और प्रूशा ने पोलैंड को आपस में बाँट लिया। रूस को १५८६ वर्गमील (पूर्व का भाग) का प्रान्त मिला। आस्ट्रिया को क्रेकाओ को छोड़ कर गेलीशिया का अधिकांश भाग मिला जिसका क्षेत्रफल १७१० वर्गमील था।

प्रूशा को पोलैंड का उत्तरी आधा भाग, मरीन वर्ग और एरमेलैंड प्रान्त मिले जिसका क्षेत्रफल ६२६ वर्गमील था। इन तीनों राज्यों ने मिलकर पोलैंड का बिधान बनाया। जिसके अनुसार पोलैंड उनके अधीन होकर रहने को था। इस बिधान की ख़राबियों को देखकर पोलैंड के चतुर नेतागणों ने अपनी काउन्सिल (सभा) को तोड़ दिया और दूसरी सभा बुलाई जिसने विधान में सुधार किया। इस समय प्रशा और आस्ट्रिया में लाग डाँट थी। इसलिये पोलैंड ने १८६१ ई० में प्रूशा से संधि करली कि वे दुख के समय एक दूसरे की सहायता करेंगे।

जब रूस ने यह सुना तो उसने पुराने विधान को ज़बरदस्ती पोलैंड पर लादने का निश्चय किया किन्तु साथ ही साथ यह भी कहा कि पोलिश प्रजातंत्र राज्य

को वह कुछ हानि न पहुँचावेगा। एक बड़ी सेना पोलैंड भेजी गई। पोलिश डायट की बैठक हुई जिसके अनुसार ४०,००० सेना रूस का सामना करने को भेजी गई और इगनेसी पोटोस्की बार्लिन सहायता माँगने के लिये भेजा गया। किन्तु प्रूशा के राजा ने सहायता देने से बिल्कुल इन्कार कर दिया।

पोलैण्ड का द्वितीय बँटवारा सितम्बर २३ सन् १७९३ ईसवी को हुआ। इसके अनुसार लिथोनिया से मोलडाविया प्रान्त तक सारा पूर्वी भाग लगभग २५,००० वर्गमील रूस को मिला। प्रूशा को डाबरज़ीन, कुजाविया, बड़े पोलैण्ड का अधिकांश भाग, थार्न और डैन्ज़िग नगर मिले। पोलैण्ड राज्य घटाकर पहले का तिहाई कर दिया गया।

पोलैण्ड का तीसरा बँटवारा सन् १७९६

इसके अनुसार आस्ट्रिया को पश्चिमी गैलीशिया, और दक्षिणी मसोविया का प्रान्त मिला, प्रशा को पश्चिमी मसोविया और वारसा मिला शेष भाग सब रूस ने ले लिया।

नेपोलियनानिक काल

नेपोलियन ने जब योरुप के राजाओं को हरा कर अपनी सत्ता योरुप में स्थापित की तो उसने ज़ार के हराने के पश्चात् पोलैंड का विधान बनाया किन्तु जब नेपोलियन की हार हुई और १८१५ ई० में वियना की काँग्रेस बैठी तो फिर पोलैंड की वही दशा हो गई। किन्तु रूस का ज़ार एलेक्ज़ेन्डर स्वतंत्रता का प्रेमी था। इसलिये उसने पोलैंड के प्रति अपनी उदारता का परिचय दिया और ऐसा विधान बनाया जिससे नागरिक स्वतंत्रता उन्हें प्राप्त हो सके। १८२९ ई० में निकोलस पोलैंड का राजा हुआ। इस तरह पोलैंड सन् १९१४ की बड़ी लड़ाई तक रूस, जर्मनी और आस्ट्रिया के आधीन रहा।

सन् १९१४ की बड़ी लड़ाई के समय पोलैण्ड की दशा

जिस समय १९१४ की बड़ी लड़ाई आरम्भ हुई उस समय पोलैंड एक उथल पुथल की दशा में था। पोलैंड में न तो उस समय एकता थी और न कोई संगठन था। पिलसुडस्की नामक व्यक्ति बड़ा उत्साही और बहादुर था। उसने एक सेना तयार करके गेलीशिया की

सीमा पार करके वह रूस की सेना के मुकाबले में जा टूटा और एक स्वतंत्र पोल की भाँति लड़ाई आरम्भ कर दी। किन्तु पोलिस नैशनल कमेटी (जो क्रेकाओ में बनी थी) ज़ार की सहायता करना चाहती थी। डमोस्की की पार्टी की मीटिंग वारसा में हुई। उसने घोषणा की कि पोलिश नैशनल कमेटी पोलैंड की प्रतिनिध नहीं है। उसने ज़ार के विरुद्ध रूस का साथ देने का निर्णय किया।

किन्तु १६१५ ई० में पोलैंड कांग्रेस को मध्य योरुपीय लोगों ने जीत लिया और अगस्त १६१५ को वारसा पर भी अधिकार कर लिया और उसी दिन जर्मनी ने वारसा में अपनी ओर से राज्य शासन स्थापित किया और लुबलिन में आस्ट्रिया-हंगारी ने शासन स्थापित किया। ५ नवम्बर सन् १६१६ को जर्मनी और आस्ट्रिया ने घोषणा की कि पोलैंड स्वतंत्र राज्य होगा और उसका मध्य योरुप से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो जावेगा। २६ नवम्बर सन् १६१६ में एक (अस्थायी) प्रावीज़नल कौन्सिल आफ़ स्टेट बनाई गई। इसका कार्य्य १४ जनवरी १६१७ से आरम्भ हुआ और पिलसुडस्की ने पोलैंड की राष्ट्रीय सेना का संगठन करना आरम्भ किया और सेना में बड़े ज़ोरों की

तयारी होने लगी। किन्तु उसने इन्कार किया कि पोलैण्ड राष्ट्रीय सेना जर्मन लोगों के काम नहीं आ सकती।

मार्च १९१७ में ज़ारशाही का अन्त हुआ और रूस में दूसरी गवर्नमेन्ट स्थापित हुई। इसने घोषणा की कि पोलैण्ड को अधिकार प्राप्त है कि वह स्वयम् अपना निर्णय कर सकता है। साथ ही साथ उसने यह भी घोषणा की कि वह पोलैंड का स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की प्रतिज्ञा करती है।

मई १९१७ में आस्ट्रियन पार्ल्यामेन्ट के पोल सदस्य ने एक मत होकर स्वतंत्र संगठित पोलैंड राष्ट्र, समुद्री मार्ग के साथ अपनी माँग पेश की। उसी समय वारसा की पोलिश काँउन्सिल आफ स्टेट ने भी अपने अधिकारों को बढ़ाने को कहा। और जर्मनी के लिये सेना की भरती के बारे में रोक पैदा की। पिलसुडस्की ने अपनी पार्टी के साथ डायट से अस्तीफा दे दिया और चुपके चुपके पोलिश सेना की तयारी करने लगा।

२२ जुलाई को पिलसुडस्की की गिरफ्तारी हुई, जिससे पोलैण्ड में बड़ी अशांति फैल गई। डायट के प्रति लोगों का विश्वास जाता रहा। इसलिये डायट ने इस्तीफ़ा दे



पोलैंड के दो कुली काम की खोज में बैठे हैं।



पोलैंड के कुली बहुत भारी बोझा ले जाते हैं।



वार्सा नगर का एक दृश्य। वर्तमान युद्ध में इस नगर के बहुत से भाग गोलाबारी से ऐसे नष्ट हो गये कि पहचाने नहीं जा सकते हैं।



पोलैंड के ग्रामीण जीवन का एक दृश्य

दिया। आस्ट्रिया और जर्मनी ने एक दूसरी सरकार १५ अक्तूबर को पोलैंड में बनाई जिसके तीन मेम्बर डाक्टर कैकोस्की, आर्क बिशप वारसा, प्रिंसलबे निर्सकी और ज़ोज़फ आस्ट्रोस्की थे। आस्ट्रोस्की ने अपनी प्रथम मिनिस्ट्री ७ दिसम्बर को बनाई।

इसी समय फ्रांस और अमरीका में पोल लोग अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। अमरीका राष्ट्र संघ के प्रेसीडेन्ट विलसन ने पोलैण्ड की स्वतंत्रता मान ली और पहली दिसम्बर सन् १९३७ तक फ्रांस इंगलैण्ड, इटली और अमरीका ने पेरिस की पोलिश नैशनल कमेटी को पोलैण्ड का सच्चा प्रतिनिधि स्वीकार कर लिया।

८ जनवरी १९१८ को प्रेसीडेन्ट विलसन ने घोषणा की कि पोलैंड का स्वतंत्र राज्य स्थापित होना चाहिये और उसे बाहरी समुद्री मार्ग भी मिलना चाहिये। तीसरी मार्च सन् १९१८ को सोवियट रूस ने घोषणा की कि अब उसका पोलैंड पर कुछ भी अधिकार नहीं है। तीसरी जून १९१८ को इंगलैंड, फ्रान्स और इटली के प्रधान मंत्रियों ने वर्सलीज (वर्साई) में घोषणा की कि पोलैण्ड एक स्वतंत्र राज्य है।

११ नवम्बर सन् १६१८ को पोल लोगों ने शासन आरम्भ किया और १२ नवम्बर को पिलसुड्स्की नैशनल गवर्नमेन्ट का प्रधान और पोलैण्ड की सेना का प्रधान सेनापति बनाया गया। पोलैण्ड के स्वतंत्र राज्य का विधान मार्च १६२१ में बना। १६३६ ई० में इस विधान में फिर कुछ कुछ अदल बदल किया गया।

इस विधान के अनुसार २१ साल के ऊपर के स्त्री-पुरुष वोट दे सकते हैं। और २५ के ऊपर वाले व्यक्ति डायट के सदस्य हो सकते हैं। सीनेट का सदस्य होने के लिये कम से कम ४० साल की आयु आवश्यक है। सीनेट के लिये वोट देनेवाले की आयु कम से कम ३० साल होनी चाहिये। डायट से पास होकर बिल सेनेट को जाते हैं। यदि ३० दिन तक कोई प्रश्न न उठा तो वह क़ानून बन जाता है। सेनेट और डायट दोनों को मिलाकर नेशनल एसेम्बली कहते हैं।

नेशनल एसेम्बली प्रेसीडेन्ट को चुनती है। वह सात साल के लिये चुना जाता है। उसकी सहायता के लिये सहायक मंत्रियों की एक सभा होती है।

शासन के विचार से पोलैंड १६ पैलेटनेर (प्रान्तों) में

बँटा है। एक पैलेटनेर में फिर कई एक ज़िले होते हैं। पोलैण्ड का स्वतंत्र राज्य आस्ट्रिया, जर्मनी और रूस के भागों को तोड़ कर बनाया गया था। इसलिये वहाँ हर जगह अलग अलग क़ानून प्रचलित थे। बड़ी कठिनता के बाद १६२६ में यहाँ सब कहीं एक सा शासन होने लगा।

किन्तु अभाग्यवश पोलैण्ड पर जर्मनी ने सितम्बर (सन् १६३६) में धावा मारा और सारे पोलैंड को जीत लिया। पूर्वी भाग (यूक्रेन आदि प्रान्तों) को बाद में रूस ने घुस कर ले लिया। शेष प्रान्त इस समय जर्मनी के अधिकार में है।

देश दर्शन

वारसा

वारसा पोलैंड का प्रधान नगर और राजधानी है। इस नगर की जन-संख्या १२ लाख है जो बम्बई की जन-संख्या से कुछ अधिक है। वारसा नगर विश्चुला नदी के बायें या पश्चिमी किनारे पर पोलैंड के प्रायः मध्य में स्थित है। प्रधान नगर नदी तट से १५० फुट ऊँचे टीले पर फैला हुआ है। यह पश्चिम की ओर नीचा होते होते मैदान से मिल गया है। पूर्व की ओर नदी के किनारे तक यह एक ज़ीने के रूप में दिखाई देता है। वारसा के पास नदी ६०० गज़ चौड़ी है। नदी के दूसरे किनारे पर प्रागा मुहल्ला है। दोनों भागों को मिलाने के लिये नदी के ऊपर लोहे के तीन पुल बने हुए हैं। प्रागा मुहल्ला गन्दा और भद्दा है। लेकिन यहाँ से लेनिनग्रेड और मास्को को रेल जाती है। यहीं पोलैंड के बटवारे के बाद १७६४ और १८३१ और १९३९ में स्वाधीनता के लिये पोलिश सैनिकों ने अन्तिम मोर्चा लिया था। प्रागा के लेनिनग्रेड स्टेशन से वारसा शहर का दृश्य बड़ा सुन्दर लगता है। रायल ज़ामेक या वारसा के किले पर कुछ ही पहले स्वाधीनता का झंडा फहराता था। इस समय वह जर्मनी के अधि-

कार में है। स्टार मियास्टो या पुराने नगर के घर बहुत घने बसे हुये हैं। किले के आगे नये ढंग के भवन बने हुये हैं। यहीं पार्क और बग़ीचे हैं।

वारसा नगर का इतिहास बड़ा रोमांचकारी है। कासेल स्क्वैर में बना हुआ रायल कासेल मसोविया के स्वाधीन ड्यूक लोगों ने बनवाया था। इसके बाद समय समय पर इसमें सुधार हुआ। पोलैंड का कोई ऐसा राजा नहीं हुआ जिसने पुराने महल की सुन्दरता न बढ़ाई हो। इसके बाद पोलैंड के दुर्दिन आये और शाही महल में रूस का गवर्नर जनरल रहने लगा। कासेल स्क्वैर से दक्षिण की ओर शहर का प्रधान मार्ग क्रेकाओस्की प्रज़ेदमेसी (क्रेकाओ-सड़क) है। यह सड़क पक्की है इस पर बिजली की रोशनी होती है। इसी सड़क पर पोलैंड के सबसे बड़े ज्योतिषी कोपरनीकस और पोलैंड के देशभक्त कवि एडम मिकीविक्ज़ की स्टेचू (मूर्तियाँ) हैं। यहीं होली क्रास का प्रधान गिरजाघर है। क्रेकाओ मुहल्ले के आगे नोवी स्वियट (नई दुनिया) का मुहल्ला है। इसके आगे लाज़ें की महल और बग़ीचे हैं। प्रधान सड़क के ही दोनों ओर वारसा की बड़ी बड़ी दुकाने हैं।

वारसा का विश्वविद्यालय १८१६ में बना। १८३२ में यहाँ की बहुत सी किताबें रूस चली गईं। १८३९ में

यह फिर इस शर्त पर खुला कि इसमें पोलिश भाषा न पढ़ाई जावे। बड़ी लड़ाई के बाद यह सब बातें बदल गईं। कुछ समय पहले इसमें १०,००० विद्यार्थी थे। इनमें ४००० लड़कियाँ थीं।

वारसा में कला, व्यापार आदि के कई अजायब घर हैं। बर्सन म्यज़ियम में यहूदी पुरातत्व का सामान है। मई-जून में विश्चुला नदी में बाढ़ आती है। तभी वारसा शहर का दृश्य अत्यन्त सुन्दर हो जाता है। पोलैंड के लोग बड़े सहनशील होते हैं। इसी से इनकी राजधानी वारसा में एक तिहाई (४०००) निवासी यहूदी हैं। लेकिन यहूदियों का मुहल्ला बड़ा गन्दा है। पोलैंड का छोटा मोटा व्यापार यहूदियों के हाथ में है।

वारसा में कई पुराने गिरजे, महल और भवन देखने योग्य हैं। यहाँ कई कारखाने भी हैं। देश के प्रायः मध्य में एक बड़ी नदी के किनारे बसे होने के कारण वारसा पोलैंड का एक बड़ा व्यापार-केन्द्र है। विश्चुला नदी को पार करने के लिये वारसा में तीन बड़े बड़े पुल बने हुये हैं। यहीं पोलैंड के सभा भवन (पार्ल्यामेंट) भवन और दूसरी सरकारी इमारतें हैं।

पोलैण्ड-दर्शन

डेंज़िग

डेंज़िग शहर डेंज़िग की खाड़ी के पास बाल्टिक सागर के पूर्वी भाग में स्थित है। यह नगर विश्चुला नदी की पश्चिमी शाखा के बाँयें किनारे पर बसा है। समुद्र-तट और विश्चुला के मुहाने से यह नगर ४ मील दूर है। जर्मन आक्रमण के पहले डेंज़िग के स्वाधीन नगर के साथ ७५४ वर्ग मील का प्रदेश मिला हुआ था। यह प्रदेश पूर्वी प्रूशा को पोलिश कारीडार से अलग करता था। डेंज़िग शहर के कई भागों में विश्चुला नदी की उपशाखायें फैली हुई हैं। एक शाखा मोटलाओ है जो दक्षिण-पूर्व से नगर में प्रवेश करती है। इस नदी के किनारे डाक और घाट बने हुए हैं। इससे साधारण समुद्री जहाज़ शहर के बीच तक आ सकते हैं।

लेकिन डेंज़िग शहर का प्रधान पोर्ट (बन्दरगाह) न्यूफाहा वासेर है जो पुरानी विश्चुला के मुहाने पर बसा है। १८९५ ई० से प्रधान विश्चुला एक नये मार्ग से समुद्र में गिरने लगी है। बन्दरगाह के पास ही १००० गज़ लम्बी नहर है। जब पुरानी विश्चुला का मुहाना

कांप (कीचड़) से भर गया तो जहाज़ों के आने जाने के लिये यह नहर बनाई गई थी।

डेंज़िग शहर से पोलैंड के लिये विश्चुला नदी स्वाभाविक मार्ग बनाती है। पोलैंड के व्यापार के लिये डेंज़िग सबसे बड़ा दरवाज़ा है। विश्चुला की सहायक नदियाँ और नहरें डेंज़िग शहर को जर्मनी, युक्रेन और लिथुयेनिया से जोड़ती हैं। रेल-मार्ग और हवाई मार्ग द्वारा यह और भी अधिक भागों से जुड़ा है। डेंज़िग से कोयला, चुकन्दर की शक्कर, लकड़ी, अनाज, सीमेन्ट और नेप्था बाहर भेजा जाता है। औसत से हर साल यहाँ से २७ लाख टन लकड़ी और नेप्था बाहर भेजा जाता है।

डेंज़िग ज़िले और शहर को मिलाकर यहाँ की जन संख्या चार लाख है। केवल डेंज़िग शहर की जन-संख्या लगभग ढाई लाख है। इसमें ६६ फी सदी जर्मन है। पहले यहाँ लीग की देख भाल में पोलैंड का प्रभुत्व था। पर पोलैंड के नष्ट हो जाने से यहाँ जर्मनी का अधिकार हो गया।

डेंज़िग कई बार उत्थान और पतन देख चुका है।

आरम्भ में यहाँ स्लैव जाति के मछुओं का एक छोटा उपनिवेश था। इन्हीं में पोलिश जाति के कुछ लोग भी हिल मिल गये। दसवीं सदी में इस नगर पर पोलैंड का प्रभुत्व हो गया।

पोमेरानिया के पोलिश युवराजों के शासन-काल में डेंज़िग की बड़ी उन्नति हुई। जब तेरहवीं सदी में जर्मनी से आने वाले कारीगर यहाँ बस गये। तब डेंज़िग के कला-कौशल में बड़ी उन्नति हुई।

पुराने समय से ही पोलैंड से डेंज़िग का व्यापारिक सम्बन्ध रहा हैं। डेंज़िग के कारीगरों का बनाया हुआ बढ़िया सामान पोलैंड के धनी मानी पोलिश लोग खरीदते थे।

इस प्रकार डेंज़िग नगर पर बारी बारी से पोमेरेनिया, पोलैंड, ब्रेण्डनबर्ग, डेन्मार्क और राष्ट्र संघ का अधिकार रहा। इस युद्ध में यह फिर जर्मनी के हाथ आ गया।

देश दर्शन

वर्तमान समस्या

बड़ी लड़ाई के पहिले पोलैण्ड तीन भागों में बटा हुआ था। पूर्वी बड़ा भाग रूस में शामिल था। उस पर ज़ार का राज्य था। पश्चिमी भाग जर्मनी के अधिकार में था। दक्षिणी भाग आस्ट्रिया-हंगारी के साम्राज्य का अंग था। जर्मनी वाले भाग में लोगों के घर कुछ अच्छे थे। वे खपरैल से छाये हुये थे। उस भाग में खेती के साथ कला कौशल भी था। रूसी भाग में अधिकतर घर लकड़ी के लट्ठों के बने थे। खेती इस भाग का प्रधान पेशा था। कुछ प्रदेश खास तरह की उपज के लिये प्रसिद्ध थे। जैसे लुब्लिन गेहूँ के लिये प्रसिद्ध था। लोडज़ में कपड़े के कारबार और ज्यारडाओ और ब्यालिस्टाक में लोहे और कोयले की प्रधानता थी। वारसा में कई तरह के कारबार थे। बड़ी लड़ाई के बाद इस भाग में और भी अधिक उन्नति हुई। जो भाग आस्ट्रिया के अन्तर्गत थे उनकी आर्थिक दशा बहुत गिरी हुई थी। इस ओर अधिकतर भाग ऊँचा और पहाड़ी था। ज़मीन अच्छी न थी। कार्पेथियन पर्वत के उत्तरी ढाल लकड़ी, ऊन, चमड़ा,

मक्खन, कुछ अनाज आदि चीजें बाहर भेजने के लिये पैदा करते थे। लेकिन इनकी उन्नति में आस्ट्रिया की सरकार की ओर से सदा बाधा पड़ती थी। केवल गेलिशिया में क्रेकाओ की खानों से नमक और पूर्वी कार्पेथियन से मिट्टी का तेल मिलता था। बड़ी लड़ाई के बाद जब पोलैण्ड फिर प्रजातन्त्र राज्य बना तो इन सब भागों में उन्नति हुई।

नवीन पोलैण्ड का क्षेत्रफल लगभग ९ करोड़ एकड़ था। इसमें २ करोड़ एकड़ वन और १ करोड़ एकड़ वीरान ज़मीन थी। ५० करोड़ एकड़ ज़मीन में खेती होती थी। शेष में चरागाह और बगीचे थे। पश्चिमी भाग में बड़े बड़े जर्मन जमीदार थे। कहा जाता है इनके साथ अच्छाबर्ताव नहीं होता था।

यहाँ प्रीपेट नदी के पड़ोस के दलदल योरुप भर में विलक्षण हैं। यह पोलैंड के मध्य में पूर्वी सीमा के निकट स्थित है। शीतकाल में यह जम कर ठोस हो जाते हैं। स्लेज या बिना पहिये की गाड़ी से शीत काल की बरफ पर यहां सब कहीं आना जाना हो सकता है। गरमी में यहाँ कहीं घास, कहीं दलदल और कहीं उथली धारायें और झीलें हो जाती हैं।

इन दिनों यहां आना जाना नहीं हो सकता। मच्छड़ खूब हो जाते हैं। जनसंख्या कम है। नीस्टर और विश्चुला को मिलाने वाली नहरों से ही आना जाना हो सकता है। इस प्रदेश में अधिक उन्नति नहीं हो सकी। पोलैंड एक कृषि-प्रधान देश है। गेहूँ, राई, (काला जौ), जौ, जई, मकई, आलू, चुकन्दर की शक्कर यहां की प्रधान उपज है। कोयला, लोहा, बनावटी रेशम, कागज़ की लुब्दी, कागज़ और बोर्ड भी तयार किया जाता है।

पोलैंड के नये राज्य में प्राकृतिक सीमायें न थी। पोल लोगों के अतिरिक्त यहां कुछ अल्प संख्यक जातियां भी थीं। इनके प्रति पोलैंड की सरकार ने सहिष्णुता का व्यवहार किया। विदेशी नीति में इङ्गलैंड और फ्रांस तो पोलैंड के पक्के मित्र थे ही पड़ोसियों के प्रति भी पोलैंड ने मित्रता का व्यवहार रखने की कोशिश की। रूस के साथ पोलैंड ने अनाक्रमणात्मक संधि कर ली। लेकिन जर्मनी के साथ समझौता न हो सका। डेंज़िग में जर्मन लोगों की प्रधानता थी। पोलिश कारीडार भी जर्मनी को खटकता था। अतः जर्मनी की शर्तों के अस्वीकार करने पर पोलैंड पर हमला हुआ। उसके

मित्र फ्रांस और इङ्गलैंड उसकी सैनिक सहायता न कर सके। जर्मनों ने एक महीने के भीतर अपनी भीषण सैनिक शक्ति से पोलैंड को कुचल डाला। इसी बीच में रूस ने भी पोलैंड का बहुत सा भाग दबा लिया। इस लिये पोलैंड का प्रजातन्त्र राष्ट्र कुछ समय के लिये योरुप के नकशे से मिट गया। लेकिन संसार की सहानुभूति वीर पोल लोगों के साथ है और युद्ध भी जारी है। इस लिये पोलैंड की आत्मा भी जीवित है।

पोलैंड के पिल्सुडस्की





नेपोलियन के समय में पोलैंड का पुराना देश तीन भागों में बट गया था। रूस, जर्मनी, आस्ट्रिया इन पर राज्य करते थे। वर्तमान पोलैंड के निर्माता और सेनापति जोज़फ पिल्सुठस्की का जन्म २८६२ में विल्नों ज़िले के जूलोवो नगर में हुआ था। पिल्सुड्स्की का वंश बहुत पुराना और प्रतिष्ठित था। लिथुएनिया के राजवंश से इसका सम्बन्ध था। पिल्सुड्स्की ने विल्नो और खारकोव में शिक्षा पाई थी। पिल्सुड्स्की के समय में पोलैंड की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। विल्नो की सड़कों पर पोलिस भाषा का बोलना जुर्म समझा जाता था। पिल्सुड्स्की ने अपने देश को आज़ाद करने की ठानी। उच्च वंश के लोगों में कायरता आ गई थी। इस लिये उसने सर्वसाधारण वर्ग के साम्यवादी लोगों से नाता जोड़ा। १८८७ में पिल्सुडस्की ज़ार के विरुद्ध एक साजिश में फंस गया। उसको पांच वर्ष का कड़ा दंड मिला और वह पूर्वी साइबेरिया में भेज दिया गया। १८६२ में वह

विल्नो वापिस आया और आज़ादी प्राप्त करने के लिये उसने पोलैंड में साम्यवादी दल स्थापित किया। १८९४ में उसने "रोबोतनिक" (मज़दूर) नाम का गुप्त पत्र चलाया। इस पत्र के सम्पादन करने, छापने और बाँटने का काम पिल्सुड्स्की स्वयं करता था। अखबार का कुछ भाग एक जगह और कुछ भाग दूसरी जगह छपता था। अखबार के ऊपर सरकार की कड़ी नज़र थी। जिसके पास अखबार मिलता उसको ४ वर्ष की कड़ी सज़ा होती थी। फिर भी अखबार की १६०० प्रतियां हाथों हाथ सदस्यों में बिक जाती थीं। कभी कभी एक एक अखबार के लिये कई पढ़ने वालों के बीच में छीना झपटी होती। एक एक प्रति कई पढ़ने वालों के पास बारी बारी से पहुँचती। अखबार छपने की आवाज़ किसी को न सुनाई दे इसलिये छपते समय पिल्सुड्स्की की धर्मपत्नी बड़े ज़ोर से पियानो बजाती थी। कुछ ही समय में पिल्सुड्स्की का रोबोतनिक समाचार पत्र एक शक्तिशाली संस्था बन गया।

आगे चलकर पिल्सुड्स्की का कार्यक्रम हिंसात्मक बन गया। उसने ज़ारशाही का सशस्त्र मुक़ाबला करने का निश्चय कर लिया। शस्त्रों से सुसज्जित मज़दूरों की

टोलियाँ सभाओं और जलूसों की रक्षा करतीं। ज़ार की पुलिस और फौज से मुठभेड़ हो जाती और अक्सर खून



आधुनिक पोलैंड का निर्माता पिल्डिसुडस्की।

खराबी होती। १६०० में पिल्सुड्स्की और उसकी स्त्री मेरी तुस्ज़ कीविकूज़ (जिसके साथ उसने १८६४ में

ब्याह किया था) दोनों ही रोबोतनिक के दफ़्तर में लोड्ज़ शहर में गिरफ़्तार कर लिये गये। पिल्सुड्स्की वारसा की कालकोठरी में रक्खा गया। यहाँ जो पेशी हुई उसमें उसने अपनी रक्षा पागल बन कर की। आरम्भ में यह पागलपन वास्तव में उसका आज़ादाना ढंग था। पूछताछ होने पर उसने रूसी भाषा बोलने से इन्कार कर दिया। उसने केवल पोलिश भाषा में लिखित बयान दिया और गुलामी के कानूनों का पालन न किया। उन दिनों पागल होने के लिये इतना ही काफी था। पिल्सुड्स्की को ८ वर्ष की कड़ी सज़ा और उसके बाद आजन्म क़ैद का दंड मिला। वह वारसा के क़िले की एक कोठरी में रक्खा गया। वहाँ उसके साम्यवादी मित्रों ने उसके पास पत्र भेजना आरम्भ किया। लेकिन वारसा के किले से उसे निकालना असम्भव सा था। अतः उसे ऐसे स्थान में भिजवाने का तय किया गया जहाँ से उसे निकलने में आसानी हो। इन दिनों जो राजनैतिक क़ैदी पागल हो जाते थे। वे सेन्ट पीटर्सबर्ग भेज दिये जाते थे। पिल्सुड्स्की ने पागल बनने में अपूर्व सफलता दिखलाई। वह साबुन के टुकड़े की सहायता से मुँह से झाग निकालता और सिपाहियों पर टूट सा पड़ता। साथ ही वह ऐसा

चिल्लाता मानों लोग उसे ज़हर देना चाहते हैं। अतः उसने केवल अंडे और चाकोलेट का खाना आरम्भ कर दिया। अन्त में वह सेन्टपीटर्स बर्ग के पागलखाने में भेज दिया गया। वहीं उसके एक साम्यवादी मित्र डाक्टर ने अपनी बदली करवा ली। एक दिन भेष बद-लवा कर पिल्सुडस्की को डाक्टर बाहर ले आया। बाहर मोटर तैयार था। डाक्टर मोटर को तेज़ हकवाना चाहता था। लेकिन पिल्सुडस्की ने कहा ऐसी भूल न करो। धीरे धीरे चलो। इस प्रकार वह वहाँ से बाहर आया। १६०२ में पिल्सुडस्की क्रेकाओ जाकर रहने लगा।

रूसी-जापानी युद्ध के समय पिल्सुडस्की ने पोलैंड में विद्रोह करवाने की सोची। लेकिन उसके अनुयाइयों के पास गोला बारूद की कमी थी। सहायता लेने के लिये पिल्सुडस्की जापान पहुंचा। लेकिन इसमें उसे कोई सफलता न मिली। रूसी विद्रोह और डूमा के शासन सम्बन्धी सुधार हो जाने पर पिल्सुडस्की ने क्रान्तिकारी आन्दोलन स्थगित कर दिया।

आज़ादी की एक प्राइवेट फौज तैयार करने के लिये पिल्सुडस्की ने एक सैनिक स्कूल खोला। इससे उसे

फौजी अफसर मिलने लगे। कुछ ही समय में उसकी सेना में लगभग १०,००० सिपाही शामिल हो गये।

बड़ी लड़ाई के समय उसने बड़ी दूरदर्शिता से काम लिया। वह ताड़ गया कि रूस जर्मनी से हार जायगा। वह यह भी जान गया कि अन्त में फ्रांस जर्मनी को हरा देगा। अतः उसने पहले अपनी प्राइवेट सेना रूस के विरुद्ध लड़ने के लिये आस्ट्रिया और जर्मनी की सहायता के लिये भेजी। लेकिन उसने अपनी फौज जर्मनी या आस्ट्रिया की फौज में नहीं मिलने दी। रूसी क्रान्ति के बाद पिल्सुड्स्की ने अपने मित्रों द्वारा फ्रांस से समझौता किया और आस्ट्रिया के विरुद्ध लड़ने का निश्चय कर लिया। जब पिल्सुड्स्की ने जर्मन स्वामिभक्ति की शपथ लेने से इन्कार कर दी तब वह मागडेबर्ग की जेल में ठूँस दिया गया। उसकी फौज छिन्न भिन्न कर दी गई। ऊपर से तो उसकी फौज तितर बितर हो गई। लेकिन भीतर ही भीतर (छिपे छिपे) उसका संगठन प्रबल होता गया। १९१८ में पिल्सुड्स्की छोड़ दिया गया। इस समय पूर्वी योरुपमें और सब कहीं अराजकता थी। लेकिन पिल्सुड्स्की की गुप्त फौज अब प्रकट होकर शान्ति स्थापित करने और पोलैंड को आज़ाद करने के लिये एकदम तैयार थी।

देश दर्शन

बड़ी लड़ाई के पहले पोलैंड तीन भागों में बट हुआ था। प्रत्येक भाग की आर्थिक समस्याओं में भेद था। प्रत्येक की दलबन्दी भी अलग अलग थी। प्रत्येक में नेता भी थे। लेकिन पिल्सुड्स्की सर्वमान्य था। इसी से पिल्सुड्स्की तीनों को मिलाने में सफल हुआ।

मेमल और विश्चुला में पिल्सुड्स्की को बालशेविक लोगों से गहरा सामना करना पड़ा। पर इसमें पिल्सुड्स्की ने बड़ी सैनिक योग्यता दिखलाई। कुछ ही समय में दोनों में सन्धि हो गई। १६२३ में भीतरी गड़बड़ी से क्षुब्ध होकर पिल्सुड्स्की फौज से बिलकुल अलग हो गया। १६२६ में पिल्सुड्स्की को फिर आना पड़ा। उसकी फौजों ने शान्ति स्थापित कर दी। १६२८ में पिल्सुड्स्की के दल की प्रधानता थी। लेकिन उसने राष्ट्रपति होने से इन्कार कर दिया। केवल सेना का नेतृत्व अतने हाथ में रक्खा। पर हर हालत में देश की जटिल समस्याओं को सुलझाने में पिल्सुड्स्की का हाथ रहा। पिल्सुड्स्की की मृत्यु से सारे पोलैंड में शोक छा गया। उसके मरने के कुछ ही समय बाद दुर्भाग्य से पोलैंड को फिर पराधीनता के दिन देखने पड़े।

१७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १६—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एवीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुतगाली अफ्रीका, ६—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—टयूनिस, १८—ट्रिपली, १६—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़ेवेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—वोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ६—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डिगामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ६—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ६—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज़, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर (ग्रांड केनाल)।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का २०)रु०।